आपने लिखा

शैक्षणिक संदर्भ, अंक-8 (मूल अंक 65) प्राप्त हुआ। पढ़कर बहुत मज़ा आया तथा समीक्षा करने का दुःसाहस भी किया। कुछ अंश आपको प्रेषित हैं।

'स्वतंत्रता और सीखना' लेख में लेखक ने ग्रुप 'ब' के परिणाम के लिए अधिकतम दोष विद्यालय को दिए, जो ठीक नहीं लगा। स्वतंत्रता में सामाजिक व पारिवारिक परिवेश का भी योगदान रहता है। प्रायः समाज व परिवार में निर्णय लेने का कार्य पुरुष करते हैं जिसका मनोवैज्ञानिक प्रभाव बाल-मन व मस्तिष्क पर भी पड़ता है। शायद इसी का प्रभाव छात्राओं द्वारा दिए गए उत्तरों पर पड़ा होगा।

वैसे देखा जाए तो लेखक ने मेहनत तो की है पर एक्सपेरिमेन्ट का डिज़ाइन त्रुटिपूर्ण लगा। लड़कों वाले ग्रुप के साथ लेखक पूर्व में कार्य कर चुका है। लड़के लेखक से पूर्व परिचित होने से उनकी मनोभावना व कार्यशैली से भली-भाँति परिचित थे जिसका प्रभाव परिणाम पर पड़ा। ग्रुप 'ब' की छात्राओं को किसी भी प्रकार के अभ्यास नहीं करवाए गए, फिर भी लड़के और लड़कियों से एक जैसा प्रश्न पूछा गया। इसमें कंट्रोल ग्रुप कौन-सा है और किससे तुलना करना है, स्पष्ट नहीं है। होना तो ये था कि दोनों ग्रुप से ही पूर्व में चर्चा करनी चाहिए थी। यदि ऐसा नहीं करना था तो दोनों ही ग्रुप लेखक के लिए नवीन (पूर्व परिचित नहीं) होने चाहिए थे जिससे दोनों ग्रुप के बच्चों के लिए प्रश्नकर्ता के प्रति मनोभावना एक जैसी होती। इससे प्रयोग की सत्यता अधिक सिद्ध होती।

'त्वरण, वेग और चाल' लेख के पहले पृष्ठ पर एक मोटर साइकल पर चार सवारियों को बैठा दिखाया गया है जो कि यातायात नियम के विरुद्ध है। इसके बारे में हम पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से बच्चों को पढ़ाते हैं। यह चित्र बच्चों के सामने गलत सन्देश पहुँचा रहा है। यदि पाठ की माँग के अनुसार फोटो देना अनिवार्य था तो नीचे टीप लिखना चाहिए था कि मोटर साइकल पर चार सवारी न करें, यह यातायात नियम के विरुद्ध है। यह चित्र केवल पाठ को समझाने के लिए है।

'लड़कियों की शिक्षा अब भी चुनौती है' लेख में चित्र क्रमांक3 में मोटर साइकिल का फोटो अनावश्यक दिखाया गया है। यह किसी बाइक कम्पनी के विज्ञापन जैसा लग रहा है। चाहते तो चित्र क्रमांक 5 में भी बाइक कम्पनी का नाम छुपाया जा सकता था। यदि यह एक बाइक कम्पनी के विज्ञापन का हिस्सा है तो कोई बात नहीं।

हेमा रामचन्द्रन की आत्मकथा लड़कियों को आगे बढ़ने के लिए बहुत ही प्रेरणादायक साबित होगी।

'मैं, मेरा घर, गाँव, स्कूल और किताबें' लेख में लेखक का अहं भाव अधिक लगा। सम्पूर्ण लेख मैं, मैंने, मेरा घर, मेरा मानना जैसे अहं भाव वाले शब्दों से मढ़ा है। पूरा लेख पढ़ने के बाद भी इस निष्कर्ष पर नहीं पहुँचा जा सका कि इसे अनुक्रमणिका में पहले लेख के रूप में क्यों रखा गया।

'एक दुलर्भ और यादगार पाठ' लेख पढ़ने में अच्छा लगा। खोज के ऐतिहासिक तत्वों का महत्व प्रतिपादित हुआ।

मुख पृष्ठ पर वैज्ञानिकों की मूर्तियों का फोटो बहुत अच्छा लगा। मूर्तिकार का नाम भी जानने को मिलता तो ठीक रहता। क्या

अगले किसी अंक में भारतीय वैज्ञानिकों का फोटो देखने को मिलेगा?

काजल कुमार नन्दी
उज्जैन, म.प्र.

एकलव्य द्वारा प्रकाशित द्वैमासिक पत्रिका 'संदर्भ' के नवम्बर-दिसम्बर 2009 के अंक में 'राह बनाते शिक्षक' नाम से लेख प्रकाशित किया गया है। इस लेख के 'मिटाइए फेल होने का डर, तो बच्चे स्कूल आएँगे' हिस्से में कुछ भूल हो गई है।

"उपरोक्त प्रयासों के बाद मैंने पाया कि बच्चों की उपस्थिति पहले की अपेक्षा बढ़ी तथा बच्चे नियमित स्कूल आने लगे। पर दुख इस बात का रहा कि परीक्षा के समय कुछ बच्चे शाला से नदारद रहे।... इस विषय में रणनीति नवीन शिक्षा सत्र में बनाई जा रही है कि सभी बच्चे परीक्षा के समय भी उपस्थित रहें।"

कथन, उक्त प्रकार से होना चाहिए जबकि प्रकाशित अंश में 'कुछ बच्चे शाला से नदारद रहे' के स्थान पर 'अधिकांश बच्चे शाला से नदारद रहे' प्रकाशित हो गया है।

रोहित शुक्ला
शा.प्रा.शाला, सतवासा, बाबई,
ज़िला होशंगाबाद, म.प्र.

संदर्भ अंक 66 को पढ़ने का अवसर मिला। अजय शर्मा के लेख 'स्टैण्डर्ड मॉडल - हर चीज़ का सिद्धान्त' के प्रस्तुतिकरण ने दिल को छू लिया। कण भौतिकी के गूढ़ विषयों - मूलभूत कण, द्रव्यमान, हिग्स बोसॉन आदि को सरलता से समझाने की उनकी विधा ने मजबूर कर दिया कि अपने मित्रों को यह लेख पढ़ने के लिए प्रेरित करूँ।

स्टैण्डर्ड मॉडल को हम जैसे आम आदमी को समझाने की सफलता के परिणाम स्वरूप न केवल लेखक बल्कि ज्ञानवर्धक लेख प्रकाशन हेतु 'संदर्भ' पत्रिका परिवार भी होशंगाबाद के अग्रवाल पुड़ी भण्डार के गुलाब जामुन का हकदार है।

विनय गोखले
होशंगाबाद, म.प्र.

संदर्भ का 66वाँ अंक हाथ में आया। अंक अत्यन्त आकर्षक चित्रों, सुन्दर छपाई और वैज्ञानिक जानकारियों से भरपूर है। गुणाकर मुले के व्यक्तित्व का सम्यक परिचय और उनका दक्षिणी गोलार्द्ध के आसमान से सम्बन्धित आलेख छात्रों के लिए प्रेरणास्पद है। राह बनाते शिक्षकों के अनुभव, उनकी समस्याएँ और समाधान शिक्षक वर्ग की आपसी समझ को अच्छा धरातल प्रदान करते लगे। कण भौतिकी का विवेचन छात्रों और शिक्षकों, दोनों के लिए उपयोगी है। नन्हे पौधे की बात तथा रंग-बिरंगे मेंढकों के बारे में पारुल सोनी की जानकारी दिलचस्प लगी। बिंदु एम. बंबाह के अनुभव विज्ञान के क्षेत्र में संघर्षरत लड़कियों और महिलाओं को चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनाएँ - ऐसी आकांक्षा है। कुल मिलाकर अंक बहुत ही सुन्दर बन पड़ा है, बधाई स्वीकार करें।

ऊषा चौधरी
भोपाल, म.प्र.

भूल-सुधार

पिछले अंक में प्रकाशित बिंदु बंबाह का लेख 'मैं वैज्ञानिक क्यों बनी?' इण्डियन एकेडमी ऑफ साइंसेज़ द्वारा प्रकाशित पुस्तक *लीलावतीज़ डॉटर्स* से लिया गया था। भूल-वश यह सूचना पिछले अंक में प्रकाशित नहीं हो पाई थी।

-सम्पादक मण्डल